2. 'भारत दुर्दशा' नाटक में चित्रित समस्याओं का विवेचन कीजिए। (15)

अथवा

नाटकीय तत्वों के आधार पर 'भारत दुर्दशा' नाटक की तात्विक समीक्षा कीजिए।

3 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक का प्रतिपाद्य स्पष्ट करते हुए इसकी प्रासंगिकता पर विचार कीजिए। (15)

अथवा

'ध्रुवस्वामिनी' नाटक के आधार पर 'ध्रुवस्वामिनी' की चारित्रिक विशेषताओं का विवेचन कीजिए।

4. 'कथा एक कंस की' नाटक का केंद्रीय विचार लिखिए। (15)

अथवा

'कथा एक कंस की' नाटक की रंगमंचीयता पर विचार कीजिए।

5. 'तौलिये' एकांकी की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

'उत्सर्ग' एकांकी का मूल भाव उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 5157 **K**

Unique Paper Code : 2052102302

Name of the Paper : Hindi Natak Evam Ekanki

Name of the Course : **B.A. Hons. Hindi – DSE**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. निम्नलिखित नाट्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10×3=30)

(क) कोऊ नहिं पकरत मेरो हाथ।

बीस कोटि सुत होत फिरत मैं हा हा होड़ अनाथ।।

जाकी सरन गहत सोड़ मारत सुनत न कोउ दुख गाथ।

दीन बन्यौ इत सौं उत डोलत टकरावत निज माथ।।

दिन दिन बिपति बढ़त सुख छीजत देत कोऊ नहिं साथ।
सब बिधि दुख सागर मैं डूबत धाइ उबारौ नाथ।।

अथवा

जागो जागो रे भाई!
सोवत निसि धौस गंवाई जागो जागो रे भाई।।
निसि की कौन कहै दिन बीत्यौं काल राति चलि आई।
देखि परत नहिं हित अनहित कछु परे बैरि बस जाई।।
निज उद्धार पंथ नहिं सूझत सीस धुनत पछिताई।
अबहूं चेति, पकरि राखो किन जो कछु बची बड़ाई।।
फिर पछिताए कछु नहिं स्वै है रहि जैही मुंह बाई।।
जागो जागो रे भाई।।

(ख) रोष है, हाँ मैं रोष से जली जा रही हूँ। इतना बड़ा उपहास -धर्म के नाम पर स्त्री की आज्ञाकारिता की यह पैशाचिक परीक्षा, मुझसे बलपूर्वक ली गई है। पुरोहित! तुमने जो मेरा राक्षस-विवाह कराया है, उसका उत्सव भी कितना सुन्दर है। यह जन संहार देखो, अभी उस प्रकोष्ठ में रक्त से सनी हुई शकराज की लोथ पड़ी होगी। कितने ही सैनिक दम तोड़ते होंगे, और इस रक्तधारा में तिरती हुई मैं राक्षसी-सी साँस ले रही हूँ। तुम्हारा स्वस्त्ययन मुझे शान्ति देगा?

अथवा

कुछ नहीं, मैं केवल यही कहना चाहती हूँ कि पुरुषों ने स्त्रियों को अपनी पशु-सम्पत्ति समझकर उन पर अत्याचार करने का अभ्यास बना लिया है। वह मेरे साथ नहीं चल सकता। यदि तुम मेरी रक्षा नहीं कर सकते, अपने कुल की मर्यादा, नारी का गौरव, नहीं बचा सकते, तो मुझे बेच भी नहीं सकते हो। हाँ, तुम लोगों को आपत्ति से बचाने के लिए मैं स्वयं यहाँ से चली जाऊँगी।

(ग) सोते में विकराल हाथों की लौह-जकड़ और जागते में यमवाहन की चीत्कार-सा वंशीरव। यह कैसी यातना है न सोते चैन, न जागते शान्ति। जीते हुए मृत्यु और मृत्युमय जीवन। सोने और जागने का अन्तर मिट गया। जीवन और मृत्यु की अन्तर्रेखा धुँधली पड़ती जा रहीं है। और धुँधलके में रूप ले रहे हैं-कुछ प्रश्न। मूर्तिमान प्रश्न-क्या हर अत्याचार आत्मयंत्रण है? क्यों हर हत्या आत्महत्या है?

अथवा

आप नाहक हर बात को अपनी ओर ले जाते हैं। अपनी कल्पना से मेरे दिल में वे बातें देखते हैं, जो मैं स्वप्न में भी नहीं सोचती। मुझे आपसे घृणा है या नहीं, इसे मैं ही जानती हूँयपर आपको मुझसे जरूर घृणा है। आपने मुझसे शादी कर ली, मैं जानती हूँ। क्यों कर ली, यह भी जानती हूँ। लेकिन विवाह के लिए आपका तैयार हो जाना, यह नहीं बताता कि आपको मुझसे नफरत नहीं। इसका क्रोध चाहे अब आप मेरी सफाई पर निकालें, चाहे मेरी पोशाक या मेरे स्वभाव पर।